भारत-चीन संबंधों में एक नया चरण

लेखक- संजय बारू (प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के पूर्व मीडिया सलाहकार)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

3 मई, 2019

"मसूद अजहर को वैश्विक आतंकी सूची में डालना भारत-चीन संबंधों में एक नए चरण का निर्माण कर सकता है।"

जैश-ए-मोहम्मद के प्रमुख मसूद अजहर को वैश्विक आतंकवादी घोषित करने पर अपना रुख बदलने का चीन का फैसला राष्ट्रपति शी जिनपिंग और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच वुहान शिखर सम्मेलन की पहली वर्षगाँठ को चिह्नित करने का इससे बेहतर तरीका नहीं हो सकता था। समाचार रिपोर्टों से पता चलता है कि अमेरिकी दबाव ने चीन को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के अन्य सभी सदस्यों के साथ आने के लिए मजबूर किया। हालांकि, सबसे अच्छा रहेगा कि एक-दूसरे पर आरोप लगाने के कार्य को अमेरिका और चीन पर ही छोड़ दिया जाए। जहाँ तक भारत का संबंध है, यह परिणाम स्वागत योग्य है। प्रधानमंत्री मोदी के लिए, चुनावी मौसम के दौरान यह एक और विदेश नीति जीत है। राष्ट्रपति शी ने भारत को कभी ऐसा संकेत नहीं दिया होगा, जो पीएम मोदी को एक विवादास्पद राष्ट्रीय चुनाव के बीच में मदद करेगा, लेकिन अंत में उन्होंने ऐसा किया।

भारत, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच बदलते त्रिपक्षीय परिदृश्य में यह देखा जाना अभी बाकी है कि क्या राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ईरान पर आर्थिक प्रतिबंध लगाने के अपने फैसले पर भारत को छूट देकर मोदी को अपना संकेत देंगे। यदि राष्ट्रपति ट्रम्प कठोर बने रहते हैं और भारत को एक कोने में धकेल देते हैं, तो चीन-भारत सीमा के साथ डोकलाम गतिरोध के सबसे बुरे दिनों को भुलाते हुए कई भारतीय चीन के बारे में अधिक अनुकूल दृष्टिकोण अपनाने लगेंगे। राष्ट्रपति ट्रम्प भारत में चीन की सबसे मूल्यवान विदेश नीति संपत्ति के रूप में उभर सकते हैं।

इटली से लेकर मलेशिया तक, सरकार के प्रमुखों ने हाल ही में ट्रम्प की अदूरदर्शी नीति और शी की बदलती रणनीति के सामने चीन के साथ संबंधों को पुनर्जीवित किया है। क्या यह महज चालबाजी है या चीन की रणनीति में वाकई बदलाव आया है, जिसमें शी जिनपिंग पड़ोसियों की चिंताओं के बारे में अधिक विचार कर रहे हैं। एक सवाल यह भी है कि क्या चीन में विकास के साथ-साथ ट्रम्प की 'व्यापार युद्ध' चुनौती ने भी शी के शासन को अपना रुख नरम करने के लिए प्रोत्साहित किया है। यह सवाल कुछ समय के लिए चीन पर नजर रखने वाले लोगों को परेशान जरूर करेगा। भारत को अमेरिका और चीन के साथ अपने संबंधों पर भी ध्यान देना होगा। यह एक त्रिकोणीय समीकरण है, जो लंबे समय तक ऐसा ही रहेगा।

कई कारकों ने मसूद अजहर पर चीन के फैसले को आकार दिया होगा, जिसमें चीन के भीतर, पाकिस्तान और पूरे एशिया में विकास शामिल है। कट्टरपंथी इस्लाम एशिया भर में नए स्थानों पर अपना आतंक दिखाता रहा है, जैसा कि उसने अभी हाल ही में श्रीलंका में किया था और अब यह चीन के उदय के लिए भी उतना ही चुनौतीपूर्ण है, जितना कि भारत के लिए है। दोनों देशों को एशिया में अति-शक्तिशाली कट्टरपंथी इस्लाम के खिलाफ एक बेहतर रणनीति के साथ काम करना चाहिए। अमेरिका और चीन दोनों ने ऐसी रणनीतियां अपनाई हैं जिससे एशिया को लाभ नहीं हुआ। यदि पाकिस्तान के प्रति चीन की नीति असरदार नहीं रही है, तो ईरान के प्रति भी अमेरिकी नीति असरदार नहीं रही है। पाकिस्तान की रक्षा करते हुए ईरान को दरकिनार करने की चीन और अमेरिका की नीति एशिया को सिर्फ अस्थिर बनाएगी।

मसूद अजहर जैसे कांटे को हटाने से भारत-चीन संबंधों में एक नए चरण के निर्माण की संभावना बढ़ गयी है। इस नए स्तर को भारत और चीन के बीच एशियाई सुरक्षा पर गंभीर बातचीत द्वारा परिभाषित किया जाएगा।

यूएनएससी 1267 प्रतिबंध समिति में मसूद अजहर के खिलाफ वोट ने एक और मुद्दे को सामने लाया है। समिति की फरवरी की बैठक में चीन के रुख के जवाब में, जहाँ उसने अन्य 14 सदस्यों के साथ मतदान करने से इंकार कर दिया था, भारत में चीनी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए आह्वान शुरू हो गया था। जिसके बाद चीन-भारत आर्थिक संबंधों की गहराई पर ध्यान आकर्षित करने का मुद्दा काफी हद तक नदारद हो गया। चीन के प्रति में भारत में लोकप्रिय राय में काफी बदलाव आये। अधिकांश भारतीय न तो 'हिंदी-चीन भाई-भाई' के दृष्टिकोण से चीन को देखते हैं और न ही वे '1962 के युद्ध' के दृष्टिकोण से देखते हैं। चीन तेजी से एक सफल एशियाई शक्ति के रूप में देखा जा रहा है, जिसे पाने के लिए इसने कड़ी मेहनत की है और आकांक्षात्मक भारत इसका सम्मान करता है।

आकांक्षात्मक भारत भी बढ़ती संख्या में चीन का दौरा कर रहा है और आधुनिक चीन के लिए एक नए संबंध के साथ लौट रहा है। भारत और चीन में बॉलीवुड फिल्मों में चीनी दूरसंचार वस्तुओं की लोकप्रियता से पता चलता है कि दोनों देश संबंध निर्माण के लिए सॉफ्ट पावर का उपयोग करने में सक्षम हैं। हालांकि, व्यापार असंतुलन इसके विपरीत बयानबाजी के बावजूद एक मुद्दा बना हुआ है। वुहान स्पिरिट को व्यापार संबंधों के दायरे में वास्तविक अभिव्यक्ति मिलना बाकी है। वैसे चीन ने भारत के साथ अपने व्यापार अधिशेष को कम करने के लिए तीव्रता से काम किया है, लेकिन निवल रूप में व्यापार समीकरण में कोई सुधार नहीं हुआ है।

भारत सरकार के सूत्रों के हवाले से आई खबरों के मुताबिक, चीन भारत को किये गये निर्यात को हांगकांग से दिखाने में सक्षम हुआ है। वैश्विक व्यापार आँकड़ों के प्रयोजनों के लिए, हांगकांग एक स्वतंत्र इकाई बना हुआ है, भले ही चीन बाकी दुनिया के साथ अपने व्यापार का काफी हिस्सा हांगकांग के माध्यम से करता हो। नतीजतन,भारत एक तरफ और चीन तथा हांगकांग दूसरी तरफ के बीच संयुक्त व्यापार संतुलन, 2017 में 55.4 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2018 में 60.1 बिलियन डॉलर हो गया है।

इस समय, भारत-अमेरिका और भारत-चीन संबंधों में एक दिलचस्प समानता है। सुरक्षा और आतंकवाद के मोर्चे पर अमेरिका और चीन दोनों देश भारतीय चिंताओं को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, लेकिन व्यापार के मोर्चे पर भारत के हितों को संबोधित करने के लिए तैयार नहीं हैं। क्या भारत के आर्थिक हितों की अनदेखी करते हुए दोस्ती को केवल राजनीतिक संकेतों पर बनाया जा सकता है? व्यापार नीति के मोर्चे पर भारत के विकल्प इसके विकास की गति और इसके उद्योग की प्रतिस्पर्धा से सीमित हैं। एक विकासशील देश के रूप में भारत अपना प्रभुत्व बढ़ाया है, लेकिन चीन भारत की समस्याओं के बारे में बहुत कम गंभीर है और इसे कई भारतीय समझ सकते हैं। परन्तु, सबसे अमीर अमेरिका के ट्रेड नखरे को भारत में कुछ ही लोग समझने वाले हैं।

GS World टीम...

मसूद अजहर वैश्विक आतंकी घोषित

क्या है मामला?

- हाल ही में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) ने आतंकवादी मसूद अजहर को अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी घोषित कर दिया है।
- गौरतलब हो कि भारत लंबे समय से मसूद अजहर को अंतर्राष्ट्रीय आतंकी घोषित करने की मांग कर रहा था।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की प्रतिबंध समिति द्वारा उसे ब्लैक लिस्ट में डालने के एक प्रस्ताव पर चीन द्वारा अपनी रोक हटा लेने के बाद यह कदम उठाया गया है।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा मसूद अजहर को आतंकी घोषित किए जाने के बाद अब उसकी संपत्ति जब्त हो सकेगी और उस पर यात्रा प्रतिबंध तथा हथियार संबंधी प्रतिबंध लग सकेगा।

भारत द्वारा किये गये प्रयास

- भारत सरकार द्वारा सबसे पहले वर्ष 2009 में संयुक्त राष्ट्र में प्रस्ताव रखा गया था।
- इसके बाद वर्ष 2016 में भारत ने अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस के साथ मिलकर संयुक्त राष्ट्र की 1267 प्रतिबंध समिति के समक्ष दूसरी बार प्रस्ताव रखा।
- इन्हीं देशों के समर्थन के साथ भारत ने 2017 में तीसरी बार यह प्रस्ताव रखा। इन सभी मौकों पर चीन ने वीटो का इस्तेमाल कर ऐसा होने से रोक दिया था।
- अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस की ओर से जैश सरगना अजहर पर प्रतिबंध लगाने के प्रस्ताव पर चीन ने मार्च में भी वीटो लगा दिया था।

पृष्ठभूमि

- पहली बार मसूद अजहर को श्रीनगर से 1994 में आतंकी संगठन हरकत-उल-अंसार के लिए संदिग्ध गतिविधियों के कारण गिरफ्तार किया गया था।
- हालांकि, वर्ष 1999 में उसे कंधार विमान अपरहण घटना के बाद छोड़ना पड़ा था।
- उसने मार्च, 2000 में जैश-ए-मुहम्मद आतंकी संगठन की स्थापना की जिसका उद्देश्य भारत में आतंकी गतिविधियों को अंजाम देना था।
- वर्ष 2001 में इसी आतंकी संगठन ने भारत की संसद पर हमला किया था। इसके उपरांत वर्ष 2008 में मुंबई में आतंकी हमलों को अंजाम दिया गया।

- वर्ष 2016 के पठानकोट हमले तथा 2019 में हुए पुलवामा हमले में भी मसूद अजहर के आतंकी संगठन का ही हाथ बताया जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र 1267 प्रतिबंध समिति

- आतंकवादी समूह इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड द लेवांत (आईएसआईएल) और अलकायदा प्रतिबंध समिति या 1267 प्रतिबंध समिति संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रतिबंधों के मानकों की देखरेख करती है।
- निर्धारित लिस्टिंग के मानदंडों को पूरा करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को नामित करती है।
- प्रतिबंधों से छूट के लिए सूचनाओं और अनुरोधों पर भी विचार करती है।
- यह हथियारों के आयात पर प्रतिबंध, यात्रा पर प्रतिबंध, संपत्ति जब्त करने जैसे फैसले लेती है।
- हर 18 महीने में इसकी समीक्षा भी की जाती है।
- समिति अब तक 257 लोगों और 81 संस्थाओं पर प्रतिबंध लगा चुकी है।

सुरक्षा परिषद् क्या है?

- यह संयुक्त राष्ट्र के छः प्रमुख अंगों में से एक है, जिसका गठन द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1945 में हुआ था और इसके पाँच स्थायी सदस्य (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्राँस, रूस और चीन) हैं।
- सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों के पास वीटो का अधिकार होता है। इन देशों की सदस्यता दूसरे विश्वयुद्ध के बाद के उस शक्ति संतुलन को प्रदर्शित करती है, जब सुरक्षा परिषद् का गठन किया गया था।
- इन 5 स्थायी सदस्य देशों के अलावा 10 अन्य देशों को दो साल के लिये अस्थायी सदस्य के रूप में सुरक्षा परिषद् में शामिल किया जाता है। स्थायी और अस्थायी सदस्य बारी-बारी से एक-एक महीने के लिये परिषद् के अध्यक्ष बनाए जाते हैं।
- भारत 7 बार अर्थात् 1950-51, 1967-68, 1972-73, 1977-78, 1984-85, 1991-92 और 2011-12 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् का अस्थायी सदस्य रह चुका है।
- भारत संयुक्त राष्ट्र के संस्थापक सदस्यों में से एक है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. संयुक्त राष्ट्र '1267 प्रतिबंध समिति' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-

1. यह निर्धारित लिस्टिंग के मानदण्डों को पूरा करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को नामित करती है।
2. यह हथियारों के आयात पर प्रतिबंध लगा सकती है।
3. प्रत्येक वर्ष इसकी समीक्षा की जाती है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?

(a) 1 और 2
(b) 2 और 3
(c) 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

1. Consider the following statements regarding the United Nations 1267 Sanctions Committee-

1. It nominates the individuals and institutions fulfilling the criteria of the listing.
2. It can ban the imports of weapons.
3. It is annually reviewed.

Which of the above statements are correct?

(a) 1 and 2
(b) 2 and 3
(c) 1 and 3
(d) 1, 2 and 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्नः- हाल ही में मसूद अजहर को वैश्विक आतंकवादी घोषित करने पर चीन का बदलता रुख भारत और चीन के संबंधों में नये बदलाव ला सकता है। चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

Q. The change in stance of China on the declaration of Masood Azhar as terrorist can promote new change in the relation between India and China. Discuss. (250 Words)

नोट : 2 मई को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(b) होगा।

629, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi - 110009
Ph. : 011- 27658013, 9868365322